नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

'भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति' पर राष्ट्रीय संवाद

## नई शिक्षा नीति के परिणाम अच्छे होंगे - प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 25 जून 2019: नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन अच्छा होगा तो उसके परिणाम भी अच्छे होंगे। शिक्षा नीति के मसौदे में राष्ट्रीय लक्ष्य की चर्चा की गयी है। भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो मनुष्य का सम्मान और पहचान के साधन के रूप में अपनी भाषा अधिक प्रभावशाली होती है। हमें चाहिए कि अपनी भाषा के प्रति हमें गौरव बोध का निर्माण हो। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने दिए। विश्वविद्यालय में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव

संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ की ओर से 25 और 26 जून को 'भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति' पर राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम के उदघाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. शुक्ल बोल रहे थे। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति की शिक्षा परिषद, चेन्नई के अध्यक्ष प्रो. सुंदरम पार्थसारथी, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के प्रो. संतोष शुक्ल एवं बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के शिक्षा

विभाग के अधिष्ठाता प्रो. आर. पी. शुक्ल, कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह, शिक्षा विभाग

के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर मंचासीन थे।

शिक्षा विभाग के सभागार में कार्यक्रम का उदघाटन दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। स्वागत वक्तव्य डॉ. गोपाल ठाकुर ने दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिल्पी कुमारी ने तथा

आभार डॉ. शिरीष पाल सिंह ने माना।

संवाद में सहभागिता करते हुए प्रो. सुंदरम ने कहा कि नई शिक्षा नीति के मसौदे में त्रिभाषा सूत्र का समावेश अच्छी पहल है। भाषाओं को समृद्ध करने के लिए अपनी भाषाओं में ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है। प्रो. संतोष शुक्ल का मानना था कि अनुसंधान के लिए भारतीय भाषाओं का संरक्षण, विकास और जिवंतता की आवश्यकता है। प्रो. आर. पी. शुक्ल का कहना था कि भाषाओं का विकास उनके उपयोग पर निर्भर है। प्रो. के. के. सिंह ने कहा कि शिक्षा नीति का मसौदा देश की जरुरत हो स्वीकार करने वाला है।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी प्रमुखता से उपस्थित थे।